

श्रीमद्भागवत स्कन्ध 8 अध्याय 4: गजराज का उद्धार

14 September 2026



गजराज मुक्त हो गया — और मुक्ति से भी बढ़कर। भगवान के अपने हस्त-स्पर्श से वह महान गजराज प्रकाशमय चतुर्भुज रूप में उठ खड़ा होता है और उनके साथ शाश्वत धाम को प्रस्थान करता है, जबकि स्वर्ग दोनों पर पुष्प बरसाता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिमयी यात्रा। गजेन्द्र के उद्धार से आगे बढ़ते हुए आठवें स्कन्ध का यह चौथा अध्याय ग्राह और गजराज के कष्ट के पीछे छिपे इतिहास को प्रकट करता है, और भगवान के अपने उस वरदान के साथ समाप्त होता है जो इस कथा को सुनने वाले हर व्यक्ति को प्राप्त होता है।

अध्याय की जानकारी

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 8 (आठवाँ स्कन्ध)
- अध्याय: 4 (चतुर्थ अध्याय)

- अध्याय शीर्षक: गजराज का उद्धार
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित से कहते हुए — समापन का वरदान स्वयं भगवान द्वारा
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: त्रिकूट पर्वत पर वरुण के उद्यान का सरोवर, तथा भगवान का अपने शाश्वत धाम को प्रस्थान
- केन्द्रीय विषय: ग्राह और गजराज के पूर्वजन्म प्रकट होते हैं; गजेन्द्र दिव्य रूप पाकर भगवान के धाम को जाता है; भगवान इस कथा के श्रवण का फल घोषित करते हैं
- प्रमुख श्लोक श्रेणी: स्कन्ध 8, अध्याय 4, श्लोक 1-26
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

तृतीय अध्याय में फँसे हुए गजराज ने समर्पण की अमर स्तुति की, निराकार परम भगवान की आराधना करते हुए और केवल अज्ञान से मुक्ति की याचना करते हुए — और क्योंकि उसने सर्वव्यापी भगवान को पुकारा, न कि किसी आंशिक देवता को, इसलिए स्वयं श्रीहरि गरुड़ पर उतरे, उसे और ग्राह को सरोवर से खींच लाए, और अपने चक्र से उसे मुक्त किया। यह अध्याय ठीक उसी क्षण से आरम्भ होता है, जब स्वर्ग उत्सव मनाता है और इसके पीछे की गहरी कथा प्रकाश में आती है।

स्वर्ग उत्सव मनाता है, और ग्राह का उद्धार होता है

श्रीशुकदेव राजा परीक्षित से कहते हैं कि जैसे ही उद्धार सम्पन्न हुआ, ब्रह्मा और शिव के नेतृत्व में देवताओं, ऋषियों और गन्धर्वों ने भगवान की इस लीला की प्रशंसा में पुष्प-वर्षा की। दिव्य दुन्दुभियाँ बज उठीं, गन्धर्व गाने-नाचने लगे, और सिद्ध तथा चारण उस परम पुरुष का स्तवन करने लगे।

तब एक आश्चर्य प्रकट हुआ। वह ग्राह कोई साधारण प्राणी नहीं था: वह गन्धर्वों में श्रेष्ठ हूहू नामक गन्धर्व था, जिसे बहुत पहले सागे देवल ने ग्राह-योनि का शाप दिया था। अब भगवान की कृपा से उस शाप से मुक्त होकर उसने तत्काल एक परम सुन्दर रूप धारण किया।

योऽसौ ग्राहः स वै सद्यः परमाश्चर्यरूपधृक् ।

मुक्तो देवलशापेन हूहूर्गन्धर्वसत्तमः ॥ ३ ॥

योऽसौ ग्राहः स वै सद्यः परमाश्चर्यरूपधृक् मुक्तो देवलशापेन हूहूर्गन्धर्वसत्तमः

अर्थ: जो ग्राह था वह वास्तव में गन्धर्वों में श्रेष्ठ हूहू था, जिसे सागे देवल का शाप था; उस शाप से मुक्त होकर उसने तत्काल एक परम अद्भुत रूप धारण किया। (स्कन्ध 8, अध्याय 4, श्लोक 3)

सिर झुकाकर हूहू ने उस अमर भगवान का स्तवन किया जिनकी महिमा और पवित्र कथाएँ ही गाने योग्य हैं। भगवान की कृपा से सब पापों से मुक्त होकर उसने आदरपूर्वक उनकी परिक्रमा की, नमस्कार किया, और समस्त सभा के देखते-देखते अपने धाम को लौट गया।

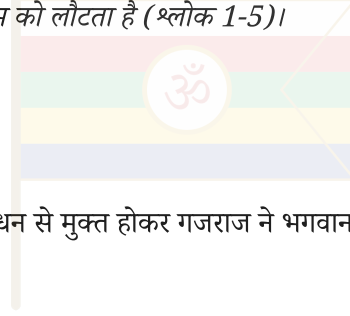


देवता और ऋषि भगवान पर पुष्प-वर्षा करते हैं, और ग्राह — जो ऋषि देवल के शाप से ग्रस्त गन्धर्व हूँ था — शापमुक्त होकर, नमन कर, भगवान की स्तुति कर अपने लोक लौट जाता है (श्लोक 1-5)।

देवता और ऋषि भगवान पर पुष्प बरसाते हैं, और वह ग्राह — जो गन्धर्व हूँ के रूप में प्रकट होता है, जिसे कभी सागे देवल का शाप था — शाप से मुक्त होकर नमस्कार करता है और भगवान का स्तवन करके अपने धाम को लौटता है (श्लोक 1-5)।

भगवान के स्पर्श से गजेन्द्र का रूपान्तर

गजराज का भी रूपान्तर हुआ। भगवान के अपने हस्त-स्पर्श से ही अज्ञान के बन्धन से मुक्त होकर गजराज ने भगवान के अपने ही रूप जैसा रूप प्राप्त किया — पीताम्बरधारी और चतुर्भुज।



गजेन्द्रो भगवत्स्पर्शाद् विमुक्तोऽज्ञानबन्धनात् ।

प्राप्तो भगवतो रूपं पीतवासाश्चतुर्भुजः ॥ ६ ॥

गजेन्द्रो भगवत्स्पर्शाद् विमुक्तोऽज्ञानबन्धनात् प्राप्तो भगवतो रूपं पीतवासाश्चतुर्भुजः

अर्थ: भगवान के स्पर्श मात्र से अज्ञान का बन्धन कट गया, और गजेन्द्र को उन्हीं के समान दिव्य स्वरूप — पीताम्बरधारी, चतुर्भुज — प्राप्त हुआ। (स्कन्ध 8, अध्याय 4, श्लोक 6)

जिस प्रार्थना ने केवल अज्ञान के हटने की याचना की थी, उसका उत्तर समस्त सीमाओं से परे मिला: केवल जल से उद्धार ही नहीं, अपितु सारूप्य — भगवान के अपने रूप जैसा दिव्य रूप, जो उनके शाश्वत सान्निध्य में प्रवेश पाने वालों का चिह्न है।

यह विशेष वरदान एक गूढ़ अर्थ रखता है। भक्ति-परम्परा भक्त की मुक्ति को निराकारवादी की मुक्ति से भिन्न मानती है: भगवान की निराकार ज्योति में विलीन हो जाना सम्बन्ध-रहित लय है, वह शान्ति जिसे परम्परा स्थायी नहीं मानती, क्योंकि वहाँ करने को कोई सेवा शेष नहीं रहती। गजेन्द्र को इसके विपरीत सारूप्य मिला — भगवान के अपने लक्षणों से युक्त रूप, और साथ ही उनके प्रिय पार्षद के रूप में सदा का सान्निध्य।

भगवान चाहते तो केवल गजराज की आत्मा को मुक्त कर बात समाप्त कर सकते थे; इसके स्थान पर उन्होंने उसे अपने शाश्वत सहचर्य में खींच लिया। ऐसी कृपा संसार से पलायन नहीं, अपितु भगवान के अपने परिवार में प्रवेश का निमन्त्रण है (श्लोक 6, 13)।



भगवान के कर-स्पर्श मात्र से मुक्त होकर गजराज भगवान के समान देदीप्यमान चतुर्भुज रूप, पीताम्बर धारण किए, प्राप्त करता है — अज्ञान से मुक्ति की उसकी प्रार्थना का उत्तर समस्त अपेक्षा से परे मिला (श्लोक 6)।

भगवान के अपने हस्त-स्पर्श से ही मुक्त होकर गजराज भगवान के अपने रूप जैसा प्रकाशमय चतुर्भुज पीताम्बरधारी रूप पाता है — अज्ञान से मुक्ति की उसकी प्रार्थना समस्त सीमाओं से परे उत्तरित होती है (श्लोक 6)।

गजराज का पूर्वजन्म — राजा इन्द्रद्युम्न

अब श्रीशुकदेव गजराज का पूर्व इतिहास खोलते हैं। पूर्वजन्म में वह द्रविड़ देश का एक पाण्ड्य राजा था, इन्द्रद्युम्न नाम से विख्यात, जो पूर्णतः भगवान विष्णु की आराधना में लगा रहता था।

स वै पूर्वमभूद् राजा पाण्ड्यो द्रविडसत्तमः ।

इन्द्रद्युम्न इति ख्यातो विष्णुव्रतपरायणः ॥ ७ ॥

स वै पूर्वमभूद् राजा पाण्ड्यो द्रविडसत्तमः इन्द्रद्युम्न इति ख्यातो विष्णुव्रतपरायणः

अर्थ: पूर्वजन्म में वह पाण्ड्य वंश का राजा था, द्रविड़ देश के लोगों में श्रेष्ठ, इन्द्रद्युम्न नाम से विख्यात और भगवान विष्णु के व्रत में परायण। (स्कन्ध 8, अध्याय 4, श्लोक 7)

समय पर इस राजा ने अपना सिंहासन त्याग दिया, जटाधारी तपस्वी बन गया, मौन का व्रत लिया, और कुलाचल पर्वत पर आश्रम बनाकर रहने लगा। एक दिन स्नान करके एकान्त में श्रीहरि की नियत आराधना आरम्भ करते समय उसे महान सागे अगस्त्य तथा उनके अनेक शिष्यों के आगमन का ध्यान न रहा। मौन-व्रत में रहते और भक्ति में लीन राजा उठकर यथोचित स्वागत न कर सका। इसे अपमान मानकर सागे क्रुद्ध हो

उठे और शाप दिया: कि यह मन्दबुद्धि पुरुष अज्ञान में डूबे और हाथी के समान मन्द होने के कारण हाथी की योनि में जन्म ले।

फिर भी यह शाप एक गुप्त कृपा बन गया। इन्द्रधुम्न ने इसे शान्ति से दैव की लीला मानकर स्वीकार किया और हाथी की देह में प्रवेश किया, जो सामान्यतः आत्मा की समस्त स्मृति मिटा देती है — परन्तु श्रीहरि की उसकी आजीवन आराधना के कारण निर्णायक क्षण में उसके भीतर, पशु-देह में भी, भगवान की स्मृति जाग उठी। इस प्रकार पूर्वजन्म की प्रार्थना ग्राह की पकड़ में उसके ओठों पर आई, और वह शाप ही उसे अन्ततः भगवान की गोद में ले गया।



अपने पूर्वजन्म में तपस्वी राजा इन्द्रधुम्न, श्रीहरि की मौन उपासना में लीन, ऋषि अगस्त्य के शिष्यों सहित आगमन को नहीं जान पाते, और वह शाप पाते हैं जो उन्हें हाथी बना देगा (श्लोक 7-11)।

पूर्वजन्म में तपस्वी राजा इन्द्रधुम्न, श्रीहरि की मौन आराधना में लीन, सागे अगस्त्य और उनके शिष्यों के आगमन को नहीं देख पाता, और वह शाप पाता है जो उसे हाथी बना देगा (श्लोक 7-11)।

भगवान का प्रस्थान और समस्त प्राणियों को उनका वरदान

इस प्रकार गजराज को सदा के लिए मुक्त करके — और अब उसी गजराज के साथ, जो एक दिव्य पार्षद में परिणत हो चुका था — नाभि-कमलधारी भगवान श्रीहरि गरुड़ पर आरुढ़ हुए और अपने दिव्य वैकुण्ठ-धाम को प्रस्थान किया, उनकी इस लीला का गन्धर्व, सिद्ध और देवता उत्सव मनाते रहे।

तत्पश्चात् श्रीशुकदेव परीक्षित से कहते हैं कि गजराज के उद्धार का यह वृत्तान्त स्वयं पवित्र करने वाला है: यह स्वर्ग की ओर ले जाता है, सुयश फैलाता है, कलियुग की मलिनताओं को धोता है, और सुनने वालों को दुःस्वप्नों से मुक्त करता है। बुद्धिमान लोग अपने कल्याण हेतु इसे प्रातःकाल में पढ़ते हैं। और प्रस्थान से पूर्व सर्वव्यापी भगवान ने आनन्दपूर्वक, उपस्थित समस्त प्राणियों के सुनते हुए, एक वरदान दिया। जो रात्रि के अन्तिम प्रहर में, प्रातः से पूर्व की पवित्र घड़ी में उठकर उन्हें स्मरण करते हैं — गजेन्द्र, इस सरोवर और पर्वत, उनके धाम और पार्षदों, उनके चक्र, शंख और वाहन, उनके मत्स्य, कूर्म और वराह अवतारों तथा समस्त दिव्य विभूतियों सहित — वे सब पापों से मुक्त हो जाते हैं। और जो उस घड़ी इसी स्तुति से उनका स्तवन करते हैं, उन्हें वे एक अमूल्य वरदान देते हैं।

ये मां स्तुवन्त्यनेनाङ्ग प्रतिबुध्य निशात्यये ।
तेषां प्राणात्यये चाहं ददामि विपुलां गतिम् ॥ २५ ॥

ये मां स्तुवन्त्यनेनाङ्ग प्रतिबुध्य निशात्यये तेषां प्राणात्यये चाहं ददामि विपुलां गतिम्

अर्थ: हे प्रिय, जो रात्रि के अन्त में जागकर इस स्तुति से मेरा स्तवन करते हैं, उन्हें मैं प्राण-प्रयाण के समय परम गति प्रदान करता हूँ। (स्कन्ध 8, अध्याय 4, श्लोक 25)

इस प्रकार कहकर भगवान ने अपना शंख पाञ्चजन्य बजाया, देवताओं के समूह को आनन्दित किया, और पुनः गरुड़ पर आरुढ़ हुए।



आरोहण से पूर्व भगवान अपना पाञ्चजन्य शंख बजाते हैं और समस्त प्राणियों को आशीर्वाद देते हैं — कि जो ब्रह्ममुहूर्त में उन्हें और इस उद्धार का स्मरण करेंगे, वे मृत्यु के समय उनका निर्मल स्मरण प्राप्त करेंगे (श्लोक 16-26)।

प्रस्थान से पूर्व भगवान अपना शंख पाञ्चजन्य बजाते हैं और समस्त प्राणियों को वरदान देते हैं — कि जो प्रातः से पूर्व की पवित्र घड़ी में उन्हें और इस उद्धार को स्मरण करेंगे, वे मृत्यु के समय उनकी निर्मल स्मृति पाएँगे (श्लोक 16-26)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान की कृपा हर याचना से बढ़कर है। गजेन्द्र ने केवल अज्ञान से मुक्ति माँगी; उसे भगवान के अपने रूप जैसा दिव्य रूप और उनका शाश्वत सान्निध्य मिला। भगवान हमारी माँग के अनुसार नहीं, अपितु अपने अपार प्रेम के अनुसार देते हैं (श्लोक 6)।
2. भगवान के हाथों में शाप भी वरदान बन जाता है। ग्राह और गजराज दोनों शापों से बँधे थे, फिर भी दोनों उन्हीं के द्वारा मुक्ति तक पहुँचाए गए। कुछ भी, यहाँ तक कि प्रत्यक्ष दुर्भाग्य भी, दिव्य कृपा की पहुँच से बाहर नहीं (श्लोक 3, 11-12)।

3. भक्ति जीव को हर जन्म में सुरक्षित रखती है। स्मृति मिटा देने वाली पशु-देह में भी इन्द्रद्युम्न की आजीवन विष्णु-आराधना ने निर्णायक क्षण में भगवान की स्मृति जगा दी। सच्ची भक्ति कभी नष्ट नहीं होती (श्लोक 7, 12)।

4. पवित्र कथाओं का श्रवण हृदय को शुद्ध करता है। स्वयं भगवान घोषित करते हैं कि यह वृत्तान्त कलि की मलिनताओं को धोता है और सुनने-पढ़ने वालों को आशीष देता है। भागवत की कथाएँ स्वयं कृपा का साधन हैं (श्लोक 14-15)।

5. मृत्यु के समय की स्मृति सर्वोच्च वरदान है। भगवान का वचन केवल सांसारिक राहत नहीं, अपितु प्राण-प्रयाण के समय उनकी निर्मल स्मृति है — वही फल जिसकी ओर गजेन्द्र की समस्त परीक्षा ले जा रही थी (श्लोक 25)।

एक भक्तिमय चिन्तन

यह अध्याय शान्ति से उस प्रश्न का उत्तर देता है जो पिछला अध्याय हमारे हृदय में छोड़ गया होगा: उद्धार के पश्चात् गजराज का क्या हुआ? उत्तर जीवित रहने से कहीं बढ़कर है। गजेन्द्र मात्र अपने झुंड और वन में नहीं लौटाया जाता; वह भगवान के जैसे रूप में उठा लिया जाता है और घर ले जाया जाता है। और कथा परदा हटाकर हमें दिखाती है कि यह समस्त लीला — शाप, पशु-जन्म, ग्राह, हजार वर्ष का संघर्ष — किसी उच्चतर दृष्टि से एक ही उद्धार-कार्य था, जो बहुत पहले से रचा जा रहा था। सागे का क्रोधपूर्ण शाप, ग्राह की क्रूर पकड़, गजराज का असहाय कष्ट: प्रत्येक एक धागा था जिसे भगवान उद्धार की ओर बुन रहे थे। अपने जीवन में हम इस विधान को उसके भीतर रहते हुए विरले ही देख पाते हैं। पर गजेन्द्र की कथा हमें विश्वास करने का निमन्त्रण देती है कि वही हाथ हमारे भीतर भी कार्यरत है, और जो भक्ति हम अभी अर्पित करते हैं, चाहे अपूर्ण हो, उस घड़ी के लिए सुरक्षित रखी जा रही है जब हमें उसकी सबसे अधिक आवश्यकता होगी।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

इस अध्याय में भगवान के अपने निर्देश का अनुसरण करते हुए, सामान्य से थोड़ा पहले, प्रातः से पूर्व की शान्त घड़ी में उठने का प्रयास करें, और अपना दिन भगवान तथा गजेन्द्र के उद्धार का स्मरण करके आरम्भ करें। कुछ मिनटों का कृतज्ञ स्मरण भी, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” के शब्दों से मुद्रांकित, आपके हृदय को भगवान के उस वचन के साथ जोड़ देता है — कि जो उन्हें उस पवित्र घड़ी में स्मरण करते हैं, वे अन्त समय में भी उन्हें स्मरण करेंगे।

उपसंहार

आठवें स्कन्ध का चतुर्थ अध्याय गजेन्द्र की कथा को मात्र उद्धार से नहीं, अपितु सामीप्य से पूर्ण करता है: एक भक्त की आजीवन आराधना, शाप और पशु-देह से होकर भी, भगवान द्वारा ऐसे स्वीकार की जाती है मानो वह कभी टूटी ही न हो, और उन्हीं के रूप तथा सान्निध्य से पुरस्कृत होती है। यही इस अध्याय का मौन वचन है — कि जिस कृपा ने गजेन्द्र को ग्राह की पकड़ से मुक्त किया, वही कृपा हम सबसे भी उस घड़ी मिलेगी जब हमारा अपना संघर्ष समाप्त होगा, बशर्ते भगवान का हमारा स्मरण न टूटे। अगले अध्याय में श्रीशुकदेव मनु रैवत के युग से मन्वन्तरों का वृत्तान्त पुनः आरम्भ करते हैं।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जाग्रत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), आठवाँ स्कन्ध, चतुर्थ अध्याय, पृष्ठ 749–751।
- शृंखला: श्रीमद्भागवत विज्ञान · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुरूप प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक से किसी सम्बद्धता अथवा उसके अनुमोदन का संकेत नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-4-the-deliverance-of-the-king-of-elephants-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट